प्राक्कथन

प्राक्कथन

साहित्य में नाटक विधा सबसे महत्त्वपूर्ण मानी जाती है। क्योंकि साहित्य की अन्य विधाओं की अपेक्षा जनमानस को सबसे अधिक प्रभावित करनेवाली विधा नाटक विधा ही है। 'काव्येषु नाटकं रम्यम्' की धारणा भारतीय साहित्य में अति प्राचीन है। नाट्य समीक्षकों ने नाटक को काव्य की सर्वोत्तम विधा माना है। नाटक दृश्य-काव्य होने से इस में लोक-परलोक की घटित अघटित घटनाओं को अभिनय की सहायता से दृश्य-रूप में दर्शकों के सामने प्रस्तुत किया जाता है। नाटक देखते समय दर्शक उसके साथ तन्मय हो जाते हैं। पंचेंद्रिय तो इससे अभिभूत हो जाते हैं। पर इससे ज्यादा मन और आत्मा तक इसका प्रभाव होता है। नाटक के इन्हीं गुणों की वजह से साहित्य की अन्य विधाओं की अपेक्षा इसका व्यापक और गहरा असर समाज जीवन पर पड़ता है। इसलिए कोई भी समस्या साहित्य की अन्य किसी भी विधा की अपेक्षा नाटक में चित्रित करके अपेक्षित प्रभाव की उम्मीद की जा सकती है। इसलिए श्रेष्ठ साहित्यिक नाटक विधा का ही उपयोग करते हैं। जगदीशचंद्र माथुर एक ऐसे नाटककार हैं उन्होंने अपने एक नाटक से ही हिंदी जगत् में अपनी अलग पहचान बनाई।

प्रेरणा एवं विषय चयन -

हिंदी भाषा और साहित्य के प्रति मुझे विशेष रुचि है। हिंदी साहित्य की हर विधाओं को मैं पढ़ती थी। लेकिन नाटक विधा पर मुझे विशेष रुचि रही है। अतः मैंने एम्. फिल. उपाधि हेतु अनुसंधान के लिए नाटक विधा का चयन किया। तब मेरे सामने यह प्रश्न आया कि किस नाटककार के नाटक को लेके मैं अनुसंधान करूँ ? तब मेरे मन में जगदीशचंद्र माथुर जी का नाम आया। क्योंकि जब मैं बी. ए. पहली वर्ष की थी तब हमारे पाठ्यक्रम में माथुरजी का 'कोणार्क' नाटक पढ़ने को था। उससे मैं काफी प्रभावित हुई थी। उसी समय मेरे मन में जगदीशचंद्र माथुर के साहित्य को जानने की अभिलाषा निर्माण हुई थी। मेरी रुचि को परखते हुए आदरणीय गुरुवर्य डॉ. के. पी. शहा जी ने माथुर जी के अन्य नाटकों की विशेष जानकारी दी। अतः मैंने अपने लघु शोध-प्रबंध के लिए जगदीशचंद्र माथुर जी के नाटक का चयन किया।

आदरणीय गुरुवर्य डॉ. के. पी. शहा जी के निर्देशन में "जगदीशचंद्र माथुर के नाटकों के पात्रों का अनुशीलन" शीर्षक निश्चित किया।

प्रस्तुत विषय के अध्ययन के पूर्व अनेक प्रश्न मेरे सामने उपस्थित हुए -

1. जगदीशचंद्र माथुर का व्यक्तित्व कैसा रहा होगा ?
2. माथुर जी के व्यक्तित्व ने उनके साहित्य को कहाँ तक प्रभावित किया है ?
3. जगदीशचंद्र माथुर के नाटकों का मूल विषय क्या है ?
4. वर्तमान युग की सामाजिक समस्याओं की दृष्टि से माथुर जी के नाटकों का महत्त्व क्या है?
5. जगदीशचंद्र माथुर के पात्र किस प्रकार के हैं ?
6. माथुर जी के नाटकीय पात्र किस वर्ग के प्रतिनिधित्व करते हैं ?
7. माथुर जी के नाटक अभिनय की दृष्टि से कैसे हैं ?
8. माथुर जी के नाटकों का उद्देश्य क्या हैं ?

उपर्युक्त प्रश्न मेरे सामने उपस्थित हुए।

अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध को निम्नांकित अध्यायों में विभाजित कर प्रस्तुत विषय का सूक्ष्मता से अध्ययन किया है-

प्रथम अध्याय - "जगदीशचंद्र माथुर : व्यक्तित्व एवं कृतित्व"

किसी भी साहित्यकार के कृतियों का अध्ययन करने के पहले उनके व्यक्तित्व का पता लगाना अत्यंत महत्त्वपूर्ण बात है। क्योंकि साहित्यकार के व्यक्तित्व की छाप उनके कृतियों पर पड़ती है। यह व्यक्तित्व ही उस लेखक के सृजन कार्य का आधार स्रोत है। अतः प्रस्तुत अध्याय में माथुर जी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का विस्तृत विवेचन प्रस्तुत किया है। प्रस्तुत अध्याय को दो भागों में विभाजित कर क्रमशः व्यक्तित्व और कृतित्व का विवेचन किया है। कृतित्व के अंतर्गत उनके समग्र साहित्य का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किया है। उपर्युक्त विवेचन के बाद अंत में निष्कर्ष दिया है।

द्वितीय अध्याय - "जगदीशचंद्र माथुर के नाटकों का परिचय"

प्रस्तुत अध्याय में माथुर जी के प्रमुख तीन नाटक 'कोणार्क', 'शारदीया' और 'पहला राजा' का परिचय दिए हैं। अंत में निष्कर्ष दिए हैं।

तृतीय अध्याय - ''जगदीशचंद्र माथुर के नाटकों के प्रमुख पात्र''

प्रस्तुत अध्याय में माथुर जी के तीनों नाटकों में चित्रित प्रमुख पुरुष और नारी पात्रों के चरित्र पर प्रकाश डाला है। अंत में निष्कर्ष प्रस्तुत किया है।

चतुर्थ अध्याय - ''जगदीशचंद्र माथुर के नाटकों के गौण पात्र''

प्रस्तुत अध्याय में माथुर जी के नाटकों में चित्रित गौण पुरुष और नारी पात्रों पर प्रकाश डाला है। अंत में निष्कर्ष दिए है।

पंचम अध्याय - ''जगदीशचंद्र माथुर के नाटकों के पात्रों की विशेषताएँ''

प्रस्तुत अध्याय में पात्रों की विशेषताओं को उजागर किया है। अंत में निष्कर्ष प्रस्तुत किया है।

उपसंहार -

इस प्रकार पाँचों अध्यायों के सूक्ष्म विवेचन-विश्लेषण के बाद अंत में जो निष्कर्ष प्राप्त हुए हैं उन्हें उपसंहार के रूप में दिया है। साथ ही शोध-कार्य में जो उपलब्धियाँ प्राप्त हुई हैं उन्हें भी उपसंहार के बाद प्रस्तुत किया है। माथुर जी के नाटकों को लेकर अनुसंधान की नई दिशाएँ भी प्रस्तुत की हैं। जिससे आगे चलकर प्रस्तुत नाटकों को लेकर नए ढंग से अनुसंधान का कार्य हो सकता है।

अंत में संदर्भ ग्रंथ सूची प्रस्तुत की है।

ऋणनिर्देश

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध की पूर्ति में मेरी प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से सहायता करनेवाले हितचिंतकों के प्रति कृतज्ञता प्रकट करना मैं अपना परम कर्तव्य समझती हूँ।

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध श्रद्धेय गुरुवर्य प्रा. डॉ. के. पी. शहाजी, रिसर्च गाईड हिंदी विभाग, शिवाजी विद्यापीठ, कोल्हापुर के सफल निर्देशन का ही फल है। आपके मार्गदर्शन एवं सहायता के बिना प्रस्तुत शोध-कार्य पूरा कर सकना असंभव था। अतः मैं आपकी अत्यंत कृतज्ञ एवं ऋणी हूँ।

साथ ही आदरणीय गुरुवर्य डॉ. पांडुरंग पाटील जी, अध्यक्ष, हिंदी विभाग, शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर ने भी यथा समय निर्देशन कर मेरी सहायता की है। अतः उनके प्रति भी आभार प्रकट करना मैं अपना कर्तव्य समझती हूँ। साथ ही आदरणीय चव्हाण जी को भी आभार प्रकट करती हूँ।

मेरे जीवन का हर महत्त्वपूर्ण कार्य मेरे पति के प्रेरणा एवं सहयोग के बिना अधूरा है। प्रस्तुत शोध-कार्य के पूर्णत्व में मेरे पतिदेव का बड़ा योगदान रहा हैं। उन्होने प्रस्तुत शोधकार्य में शुरू से अंत तक मुझे प्रेरणा एवं प्रोत्साहन देता रहा। अतः उनकी कृतज्ञता में रहना पसंद करती हूँ।

प्रस्तुत शोध-कार्य के दौरान में मेरे मित्र परिवार ने भी मेरी बड़ी सहायता की है। बेबी खिलारे, महादेवी सृंगारे, शोभा जाधव, स्नेहल आदि का बड़ा योगदान रहा है। अतः इन सब के प्रति मैं कृतज्ञता ज्ञापित करती हूँ।

साथ ही प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध के लिए शिवाजी विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग के वरिष्ठ लेखनिक श्री साळोखे जी तथा अन्य कर्मचारियों का योगदान भी पर्याप्त रहा है। अतः इनके प्रति मैं कृतज्ञ हूँ। साथ ही डॉ. बाळासाहेब खर्डेकर ग्रंथालय का पर्याप्त योगदान प्राप्त हुआ है। वहाँ के ग्रंथपाल तथा अन्य कर्मचारियों के प्रति मैं कृतज्ञता व्यक्त करती हूँ।

पुनः एक बार शोध-प्रबंध में मुझे प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप में सहयोग देनेवालों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए प्रस्तुत शोध-प्रबंध विद्वजनों के सामने परीक्षणार्थ प्रस्तुत करती हूँ।

स्थान : कोल्हापुर
तिथि :

शोध-छात्रा

(रेजुला के.)